

NCERT SOLUTIONS

CLASS - 8TH



aglasem.com

Class : 8th

Subject : Social Science

Chapter : 9

Chapter Name : राष्ट्रीय आंदोलन का संघटक: 1870 के दशक से 1947 तक

Q1 1870 और 1880 के दशकों में लोग ब्रिटिश शासन से क्यों असंतुष्ट थे?

Answer. अंग्रेज़ भारत के संसाधन व लोगों की जिंदगी पर कब्ज़ा जमाए बैठे थे और जब तक अंग्रेज़ो का नियंत्रण खत्म नहीं होता भारत, भारतीयों का नहीं हो सकता था | 1870 और 1880 के दशकों में ब्रिटिश शासन के प्रति असंतोष और गहरा हुआ | 1878 में आर्म्स एक्ट पारित किया गया जिसके जरिये भारतीयों का अपने पास हथियार रखने का अधिकार छीन लिया | उसी साल वर्नाक्यूलर एक्ट भी पारित हुआ जिसके अनुसार यदि किसी अखबार में कोई आपत्तिजनक खबर छपती है तो सरकार उसकी प्रिंटिंग प्रेस सहित सारी सामग्री जब्त कर सकती है | इससे सरकार की आलोचना करने वालों को चुप कराया जा सके | 1883 में सरकार ने इल्बर्ट बिल लागू करने का प्रयास किया जिसके लिए भी काफी हंगामा हुआ |

Page : 127, Block Name : फिर से याद करें

Q2 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस किन लोगों के पक्ष में बोल रही थी?

Answer. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस भारत के सभी विभिन्न समुदायों के प्रतिनिधियों से बनी थी। यह संगठन अपनी संपूर्ण विविधता में भारत के लिए बात करना चाहता था। कांग्रेस ने सरकार और शासन में भारतीयों को ज्यादा जगह देने के लिए आवाज़ उठायी | कांग्रेस चाहती थी की भारतीयों को सरकार ऊँचे पद दे | कांग्रेस ने कई आर्थिक मुद्दे भी उठाये | कांग्रेस केवल पेशेवर समूह, जमींदारों और उद्योगपतियों के हक के लिए ही नहीं बोल रही थी बल्कि गरीब किसानों, मजदूरों, काश्तकारों और वनवासियों के हक के लिए आवाज़ उठा रही थी |

Page : 127 , Block Name : फिर से याद करें

Q3 पहले विश्व युद्ध से भारत पर कौन से आर्थिक असर पड़े?

Answer.पहले विश्व युद्ध के कारण ब्रिटिश भारत सरकार के रक्षा खर्च में भारी वृद्धि हुई। युद्ध ने औद्योगिक सामान जैसे जूट बैग, कपड़ा और रेल की मांग पैदा की और भारत में अन्य देशों से आयात में गिरावट का कारण बना। परिणामस्वरूप, युद्ध के दौरान भारतीय उद्योगों का विस्तार हुआ। सैन्य खर्च में वृद्धि और युद्ध की आपूर्ति की मांग के कारण कीमतों में तेज वृद्धि हुई, जिसने आम लोगों के लिए बड़ी मुश्किलें पैदा कीं।

Page : 127, Block Name : फिर से याद करें

Q4 1940 के मुस्लिम लीग के प्रस्ताव में क्या माँग की गई थी?

Answer.1940 के मुस्लिम लीग के प्रस्ताव में देश के उत्तर-पश्चिमी और पूर्वी क्षेत्रों में मुसलमानों के लिए "स्वतंत्र राज्यों" की माँग की गई।

Page : 127, Block Name : फिर से याद करें

Q5 मध्यमार्गी कौन थे? वे ब्रिटिश शासन के खिलाफ किस तरह का संघर्ष करना चाहते थे?

Answer.अपने अस्तित्व के पहले बीस सालों में, कांग्रेस अपने उद्देश्यों और तरीकों के लिहाज में मध्यमार्गी पार्टी थी। वे ब्रिटिश शासन की अन्यायपूर्ण प्रकृति के बारे में सार्वजनिक जागरूकता विकसित करना चाहते थे। उन्होंने समाचार पत्र प्रकाशित किए, लेख लिखे, और दिखाया कि कैसे ब्रिटिश शासन देश के आर्थिक विनाश को आगे बढ़ा रहा था। उन्होंने अपने भाषणों में ब्रिटिश शासन की आलोचना की और जनमत जुटाने के लिए देश के विभिन्न हिस्सों में प्रतिनिधियों को भेजा। उन्होंने महसूस किया कि स्वतंत्रता और न्याय के आदर्शों के लिए अंग्रेजों का सम्मान था, और इसलिए हम भारतीयों की उचित मांगों को स्वीकार करेंगे। इन मांगों को व्यक्त करना और सरकार को भारतीयों की भावनाओं से अवगत कराना आवश्यक था।

Page : 127, Block Name : आइए विचार करें

Q6 कांग्रेस में आमूल परिवर्तनवादी की राजनीति मध्यमार्गी की राजनीति से किस तरह भिन्न थी?

Answer. 1890 के दशक तक बहुत सारे लोग कांग्रेस के राजनीतिक तौर-तरीकों पर सवाल उठाने लगे थे। नेता आमूल परिवर्तनवादी उद्देश्य और पद्धतियों के अनुसार काम करने लगे थे। ये लोग नरमपंथियों

की "निवेदन की राजनीति" के विरोध में थे। उन्होंने तर्क दिया कि लोगों को अपनी ताकत पर भरोसा करना चाहिए, न कि सरकार के "अच्छे" इरादों पर, जैसा कि नरमपंथियों की घोषित नीति थी। उनका मानना था कि लोगों को स्वराज के लिए लड़ना होगा।

Page : 127, Block Name : आइए विचार करें

Q7 चर्चा करें कि भारत के विभिन्न भागों में असहयोग आंदोलन ने किस-किस तरह के रूप ग्रहण किए? लोग गांधीजी के बारे में क्या समझते थे?

Answer. भारत के विभिन्न भागों में असहयोग आंदोलन को अलग-अलग व्यक्तियों, वर्गों और समूहों द्वारा अलग-अलग तरीकों से समझा और लागू किया गया –

-हजारों छात्रों ने सरकार द्वारा खोले गए स्कूल और कॉलेज छोड़ दिए। लोगों ने विदेशी कपड़े के सार्वजनिक अलाव जलाए। विधानसभाओं का बहिष्कार किया गया।

-आंध्र प्रदेश के गुंटूर जिले में, आदिवासी और गरीब किसानों ने औपनिवेशिक राज्य के खिलाफ अपने वन संसाधनों के उपयोग को प्रतिबंधित करने के लिए विरोध किया। उन्होंने कई बार "वन सत्याग्रह" किया, कभी-कभी अपने मवेशियों को शुल्क के बिना जंगलों में चरने भेजते थे।

-असम में, चाय बागान मजदूरों ने अपने वेतन में बड़ी वृद्धि की मांग की। जब मांगें पूरी नहीं हुईं, तो उन्होंने ब्रिटिश स्वामित्व वाले बागानों को छोड़ दिया।

-तटीय आंध्र और आंतरिक तमिलनाडु में, शराब की दुकानों की घेराबंदी की गयी।

-खेड़ा, गुजरात में, पाटीदार किसानों ने अंग्रेजों की भारी लगान की मांग के खिलाफ अहिंसक अभियान चलाया।

-पंजाब में, सिखों के अकाली आंदोलन ने अपने गुरुद्वारों से अंग्रेजों द्वारा समर्थित भ्रष्ट महंतों को हटाने की मांग की।

अधिकांश लोगों के लिए, गांधीजी एक तरह के मसीहा थे, कोई ऐसा व्यक्ति जो उनके दुख और गरीबी को दूर करने में उनकी मदद कर सके। किसानों का मानना था कि वह जमींदारों के खिलाफ उनकी लड़ाई में उनकी मदद करेगा, जबकि खेतिहर मजदूरों को लगा कि वह उन्हें जमीन मुहैया कराएगा। लोगों ने गांधीजी का नाम लिया और विभिन्न कार्यों को अंजाम दिया और सफल होने पर उन्होंने अपनी उपलब्धियों का श्रेय गांधीजी को दिया।

Page : 127, Block Name : आइए विचार करें

Q8 गांधीजी ने नमक कानून तोड़ने का फैसला क्यों लिया?

Answer. 1930 में गांधीजी ने नमक कानून तोड़ने के लिए यात्रा का ऐलान किया। स्वतंत्रता की चाह में गांधीजी और अन्य राष्ट्रवादियों ने यह कदम उठाया क्योंकि उस समय नमक के उत्पादन और बिक्री पर सिर्फ अंग्रेजी सरकार का अधिकार था। गांधीजी और अन्य राष्ट्रवादियों का कहना था कि नमक हमारे भोजन का बुनियादी हिस्सा है और इस पर टैक्स वसूलना पाप है।

Page : 127, Block Name : आइए विचार करें

Q9 1937-47 की उन घटनाओं पर चर्चा करें जिनके फलस्वरूप पाकिस्तान का जन्म हुआ?

Answer. 1930 के दशक के आखिरी सालों से मुस्लिम लीग ने मुसलमानों को हिंदुओं से एक अलग "राष्ट्र" के रूप में देखना शुरू किया। 1937 में कांग्रेस ने संयुक्त प्रांत में मुसलिम लीग के संयुक्त सरकार बनाने के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। इससे संघ नाराज हो गया। 1937 के प्रांतीय चुनाव ने मुसलिम लीग को यह यकीन दिला दिया कि मुसलमान अल्पसंख्यक थे, और उन्हें हमेशा किसी भी लोकतांत्रिक ढांचे में दूसरी भूमिका निभानी होगी। 1945 में द्वितीय विश्व युद्ध के अंत में, अंग्रेजों ने भारत की स्वतंत्रता के लिए कांग्रेस और लीग से बातचीत की। हालाँकि, वार्ता विफल रही क्योंकि लीग ने खुद को भारत के मुसलमानों के एकमात्र प्रवक्ता के रूप में देखा, और कांग्रेस इस दावे को स्वीकार नहीं कर सकी क्योंकि बड़ी संख्या में मुसलमानों ने अभी भी इसका समर्थन किया था। 1946 में प्रांतों के चुनाव फिर से हुए। कांग्रेस ने "सामान्य" निर्वाचन क्षेत्रों में अच्छा प्रदर्शन किया, लेकिन मुस्लिमों के लिए आरक्षित सीटों में लीग की सफलता शानदार रही। इसके कारण मुसलमानों के लिए एक अलग राष्ट्र की अधिक माँग हुई। मार्च 1946 में, ब्रिटिश कैबिनेट ने इस माँग की जांच करने और एक स्वतंत्र भारत के लिए उपयुक्त राजनीतिक ढांचे का सुझाव देने के लिए तीन सदस्यीय मिशन दिल्ली भेजा। कैबिनेट मिशन की विफलता के बाद, मुस्लिम लीग ने अपनी पाकिस्तान की माँग को जीतने के लिए बड़े पैमाने पर आंदोलन का फैसला किया। इसने 16 अगस्त 1946 को "प्रत्यक्ष कार्रवाई दिवस" घोषित किया। इस दिन कलकत्ता में दंगे भड़क उठे, कई दिनों तक चले और इसके परिणामस्वरूप हजारों लोग मारे गए। मार्च 1947 तक, हिंसा उत्तरी भारत के विभिन्न हिस्सों में फैल गई थी। अंत में, भारत के विभाजन की माँग को अंतिम रूप दिया गया, और "पाकिस्तान" का जन्म हुआ।

Page : 127, Block Name : आइए विचार करें

aglasem.com